IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

जनपद लखीमपुर खीरी में भूमि उपयोग प्रतिरूप : एक भौगोलिक अध्ययन

ओमकार[1], डॉ॰ राजीव कुमार चौरसिया[2]

[1]शोध छात्र, भूगोल विभाग, वी॰ एस॰ एस॰ डी॰ कॉलेज, कानपुर (उ॰प्र॰)

[2]प्रोफेसर, भूगोल विभाग, वी॰ एस॰ एस॰ डी॰ कॉलेज, कानपुर (उ॰प्र॰)

सारांश

भूमि एक महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन है। यह मानव के विकास का मुख्य आधार है। भूमि का उपयोग वहाँ पर निवास करने वाले लोगों की आवश्यकताओं, भौगोलिक विशेषताओं, तथा मानव विवेक पर आधारित होता है। क्षेत्र विशेष में भूमि उपयोग प्रवन्धन जितना ही अच्छा होगा, वह क्षेत्र उतना ही अधिक आर्थिक प्रगति करेगा। अध्ययन क्षेत्र जनपद लखीमपुर खीरी उत्तर प्रदेश के मध्य गंगा मैदान में स्थित उपजाऊ जलोढ़ मृदा प्रधान क्षेत्र है। अतः जनपद में सबसे अधिक भूमि कृषि कार्य में से ही उपयोग की जाती है। जनपद में कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल के 60.06% भू-भाग पर कृषि, उसके पश्चात 25.20% भू-भाग पर वन, 0.81% पर कृष्य बेकार भूमि, 0.77% पर उद्यानों, वृक्षों, एवं झाडियों का क्षेत्रफल, 0.75% पर वर्तमान परती भूमि, 0.62% पर उसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि, 0.13% चरागाह, तथा सबसे कम क्षेत्र पर अन्य परती भूमि मात्र 0.01% का भूमि उपयोग प्रतिरूप देखने को मिलता है। शोध के लिए मुख्यतया द्वितीयक आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। शोध का मुख्य उद्देश्य जनपद के वर्तनात भूमि उपयोग प्रतिरूप का अध्ययन करना है, जिससे जनपद के लिए की भावी योजनाओं के निर्माण व सतत विकास में सहयोग मिल सके।

मुख्य शब्द- भूमि उपयोग, कृषि, वनभूमि, ऊसर भूमि, चरागाह।

प्रस्तावना

भूमि उपयोग मानव के विकास का मुख्य आधार है। भूमि उपयोग प्रतिरूप से तात्पर्य उस विशेष भौगोलिक क्षेत्र में भूमि के विभिन्न उपयोगों के वितरण और संगठन से है। यह भूमि के विभिन्न उपयोगों की श्रेणियाँ दर्शाता है, जैसे कृषि, आवास, उद्योग, वाणिज्य, परिवहन, वनस्पति, और अन्य उपयोग। भूमि उपयोग प्रतिरूप यह बताता है कि किसी क्षेत्र में भूमि किस प्रकार उपयोग की जा रही है और उस उपयोग में कितनी मात्रा समाहित है। भूमि उपयोग प्रतिरूप का अध्ययन शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में विकास की योजना बनाने, संसाधनों के उपयोग को समझने, और पर्यावरणीय प्रभावों का मूल्यांकन करने में मदद करता है। यह प्रतिरूप यह भी बताता है कि किसी विशेष क्षेत्र में भूमि का किस प्रकार से विकास हो सकता है और भविष्य में कैसे भूमि उपयोग की जरूरतें बदल सकती हैं।

कैरियल महोदय, के अनुसार ''भूमि प्रयोग'' 'भूमि उपयोग' तथा भूमि संसाधन उपयोग तीनों ही भूमि विकास की विशिष्ट परिस्थितियों के घोतक हैं, इन परिस्थितियों का संबंध भूमि उपयोग के विकास की तीन भिन्न-भिन्न अवस्थाओं से हैं जो क्रमशः अलग-अलग समयों में संपन्न होती है।

अध्ययन क्षेत्र जनपद लखीमपुर खीरी की भूमि प्रायः समतल व उपजाऊ होने की वजह से इसका सबसे अधिक उपयोग कृषि फसलों के अंतर्गत ही होता है। यही कारण है कि जनपद में शुद्ध बोया गया क्षेत्र सर्वाधिक (60.06%) है। जनपद के भूमि उपयोग पर यहाँ के प्राकृतिक व सांस्कृतिक परिवेश का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

अध्ययन क्षेत्र-

प्रस्तुत शोध क्षेत्र जनपद लखीमपुर-खीरी उत्तर प्रदेश राज्य के उत्तर मध्य गंगा क्षेत्र में स्थित है। जनपद का भौगोलिक विस्तार 27□6' उत्तरी अक्षांश से 28□6' उत्तरी अक्षांश तथा 80□34' पूर्वी देशान्तर से 81□30' पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। जनपद की उत्तरी सीमा नेपाल देश को स्पर्श करती है। इस जनपद की पूर्वी सीमा बहराइच जनपद को, दक्षिणी सीमा हरदोई व सीतापुर जनपद को तथा पश्चिमी सीमा शाहजहाँपुर व पीलीभीत जिले को स्पर्श करती है। अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत शारदा, घाघरा, गोमती, कठना, उल्ल, सरायन जमुआरी, कोरियाला, चौका व मोहाना आदि नदियाँ प्रवाहित होती हैं। भारत के सर्वेक्षण जनरल के अनुसार जनपद का भौगोलिक क्षेत्रफल 7680 वर्ग किलोमीटर है। क्षेत्रफल के आधार पर यह प्रदेश का सबसे बड़ा जनपद है। जनपद को प्रशासनिक दृष्टि से 7 तहसीलों, 15 विकासखण्डों, 156 न्याय पंचायतों तथा 995 ग्राम पंचायतों में विभाजित किया गया है। जनगणना वर्ष 2011 के आधार पर जनपद की कुल जनसंख्या 40,21,243 व्यक्ति है। जिसमें से 21,23,186 पुरूष व 18,98,056 महिलाएँ हैं। जनपद की दशकीय वृद्धि दर 25.38% है।

अध्ययन क्षेत्र जनपद लखीमपुर-खीरी

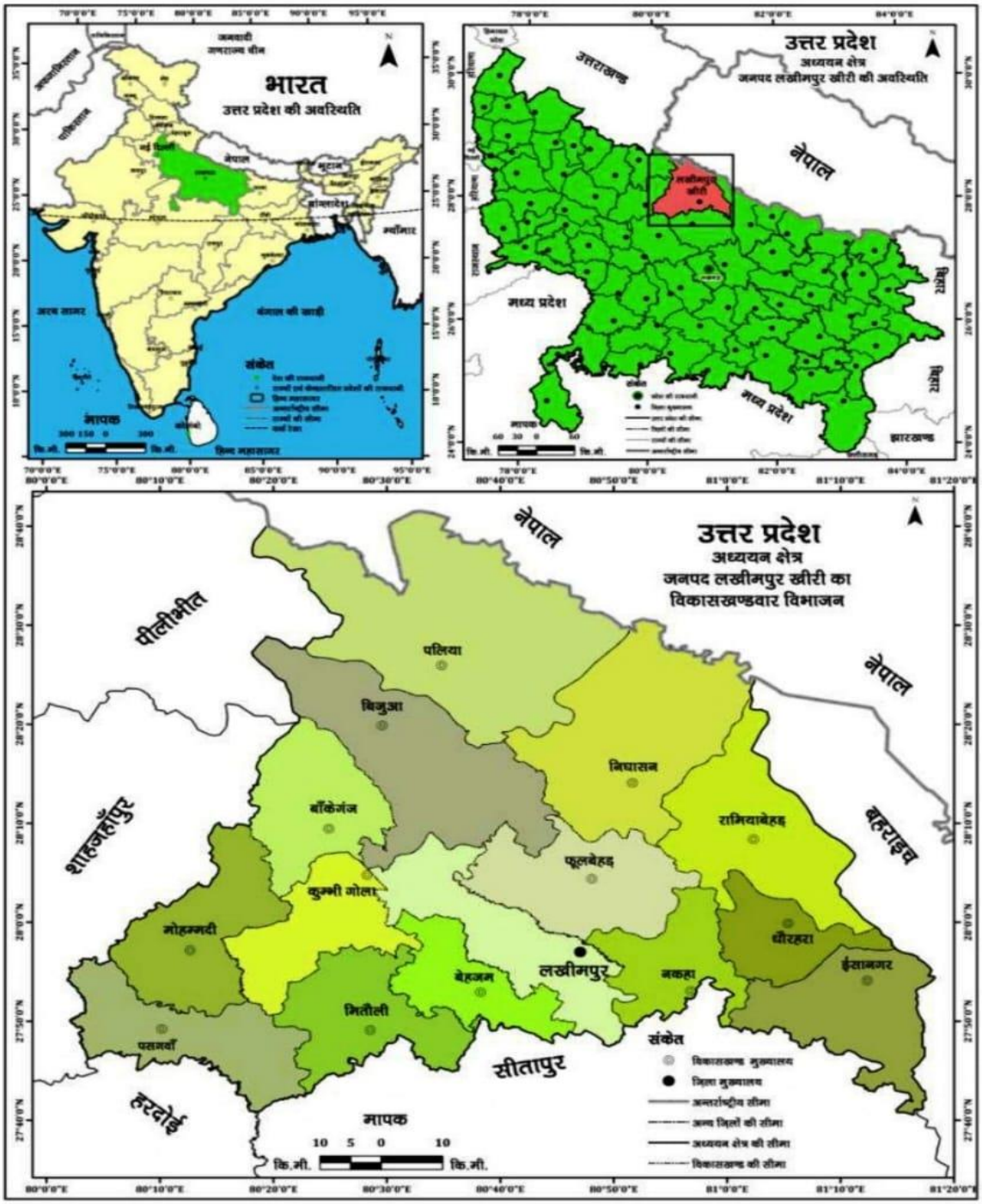

Fig-1

उद्देश्य- प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य जनपद लखीमपुर खीरी के वर्तमान सामान्य भूमि उपयोग प्रतिरूप का अध्ययन करना है, जिससे कि जनपद के भावी विकास के लिए निर्मित की जाने वाली योजनाओं तथा जनपद के सतत् विकास में सहयोग मिल सके।

आंकड़ा स्रोत एवं विधितंत्र-

प्रस्तुत शोध पत्र में प्रायः द्वितीयक आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। आंकड़ों को एकत्र करने में जिला सांख्यिकी पत्रिका जनपद लखीमपुर-खीरी, वर्ष 2023 को मुख्य आधार बनाया गया है। इसके साथ-साथ यथास्थान अन्य शोध पत्र, पत्रिकाओं, पुस्तकों तथा वेबसाइट का प्रयोग किया गया है। शोध में अवलोकनात्मक, विश्लेषणात्मक, तथा विवेचनात्मक विधि तंत्र का प्रयोग किया गया है। अध्ययन को और अधिक स्पष्ट व ग्राह्य बनाने के लिए यथास्थान मानचित्र व तालिका आदि का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र में भूमि उपयोग प्रतिरूप -

अध्ययन क्षेत्र जनपद लखीमपुर-खीरी में भूमि उपयोग प्रतिरूप पर यहाँ की धरातलीय बनावट, संरचना, अपवाह तंत्र, तथा प्राकृतिक व सांस्कृतिक सुविधाओं का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। सामान्य भूमि उपयोग की दृष्टि से इसे निम्नलिखित भागों में विभाजित किया गया है-

1. कुल प्रतिवेदित भूमि,
2. वन भूमि,
3. कृषि योग्य बंजर भूमि,
4. वर्तमान परती भूमि,
5. अन्य परती भूमि,
6. ऊसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि,
7. कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि,
8. चरागाह,
9. उद्यान, बाग, वृक्ष एवं झाड़ियों का क्षेत्रफल तथा
10. शुद्ध बोया गया क्षेत्र।

जनपद लखीमपुर खीरी में विकासखण्डवार भूमि उपयोग (वर्ष- 2021-22)

क्र. सं.	विकासखण्ड	कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल (हेक्ट. में)	वन (% में)	कृष्य बेकार भूमि (% में)	वर्तमान परती (% में)	अन्य परती (% में)	ऊसर एवं कृषि हेतु अयोग्य भूमि (% में)	कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि (% में)	चरागाह (% में)	उद्यानों वृक्षों एवं झाड़ियों का क्षेत्रफल (% में)	शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल (% में)

1.	पलिया	54746	7.50	2.34	0.81	0.02	0.53	11.22	**0.01**	1.18	76.35
2.	निघासन	51191	14.30	0.51	1.07	0.02	0.47	12.00	0.08	1.33	70.18
3.	रामियाबेहड़	43289	12.37	0.61	0.66	0.02	0.53	17.67	0.02	1.98	66.10
4.	कुम्भीगोला	30016	3.16	0.34	1.12	0.03	0.59	13.97	0.08	1.54	79.11
5.	बिजुआ	45895	19.76	0.43	0.67	0.02	**0.45**	13.50	0.06	0.65	64.42
6.	बाकेगंज	36166	**22.34**	0.48	0.86	**0.00**	0.57	**9.46**	0.06	0.52	65.66
7.	मोहम्मदी	38163	2.64	0.15	0.81	**0.00**	0.85	10.19	0.38	0.83	84.12
8.	मितौली	32746	1.54	0.36	1.13	0.01	0.80	15.35	**0.64**	0.42	79.70
9.	पसगवां	38037	1.41	0.69	0.86	**0.00**	1.01	14.44	0.55	0.60	80.39
10.	बेहजम	26256	1.39	0.65	0.88	**0.00**	**2.35**	11.46	0.15	0.57	82.51
11.	लखीमपुर	50679	**0.90**	0.23	**0.30**	**0.00**	0.51	9.70	0.15	**0.28**	**87.90**
12.	फूलबेहड़	31140	3.47	0.51	0.86	**0.00**	1.02	12.65	0.13	1.44	80.03
13	नकहा	24923	4.00	**0.12**	0.79	**0.00**	0.95	24.23	0.12	0.85	68.89
14.	धौरहरा	8082	4.49	2.52	**4.09**	0.01	2.25	**46.95**	0.09	**2.26**	**37.29**
15.	ईसानगर	21852	9.76	**8.69**	2.24	**0.05**	0.53	29.17	0.05	0.83	48.64
16.	**योग जनपद**	**656232**	**25.20**	**0.81**	**0.75**	**0.01**	**0.62**	**11.61**	**0.13**	**0.77**	**60.06**

स्रोत- जिला सांख्यिकीय पत्रिका लखीमपुर-खीरी (वर्ष-2023)

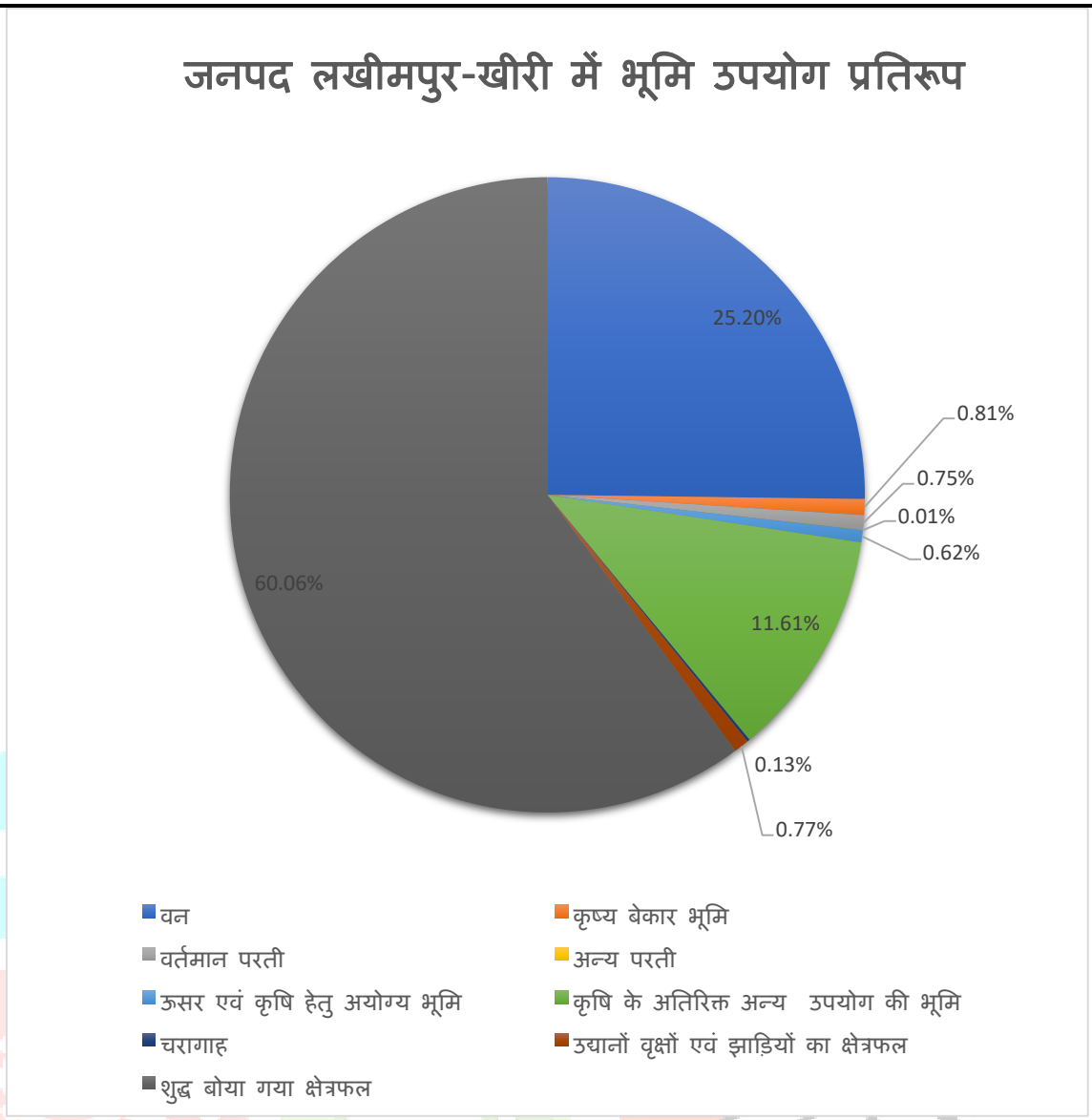

Fig-2

कुल प्रतिवेदित भूमि-

अध्ययन क्षेत्र जनपद लखीमपुर खीरी में कुल प्रतिवेदन भूमि का क्षेत्रफल 656232 हैक्टेयर है। विकासखंड स्तर पर सबसे अधिक कुल प्रतिवेदित भूमि पलिया विकासखंड में 54746 हेक्टेयर, जबकि दूसरे स्थान पर सबसे अधिक कुल प्रतिवेदित भूमि निघासन विकासखंड में 51 191 हेक्टेयर है। जनपद में सबसे कम कुल प्रतिवेदित भूमि का क्षेत्रफल धौरहरा विकासखंड में मात्र 8082 हेक्टेयर है।

वन भूमि-

वन भूमि से तात्पर्य उन भू-भागों से है, जो वृक्षों, झाड़ियों और अन्य वनस्पतियों से आच्छादित होते हैं और जिनका उपयोग मुख्य रूप से वनों के संरक्षण, जैव विविधता बनाए रखने, पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने और प्राकृतिक संसाधनों के लिए किया जाता है। अध्ययन क्षेत्र में कुल वन भूमि का विस्तार जनपद के कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल के 165390 हेक्टेअर अर्थात् 25.20% भू-भाग पर पाया जाता है। विकासखण्ड स्तर पर सबसे अधिक

वन विस्तार बाकेगंज विकासखण्ड में 22.34% भू-भाग पर तथा सबसे कम लखीमपुर विकासखण्ड में 0.90% भू-भाग पर देखने को मिलता है।

कृष्य बेकार भूमि-

कृष्य बेकार भूमि के अन्तर्गत जनपद का 0.81% भू-क्षेत्र आता है। विकासखण्ड स्तर पर सबसे अधिक कृष्य बेकार भूमि का प्रतिशत ईसानगर विकासखण्ड में 8.69% है, तथा सबसे कम नकहा विकासखण्ड में 0.12% पाया जाता है।

वर्तमान परती-

वर्तमान परती क्षेत्र के अंतर्गत जनपद के कुल प्रतिवेदित क्षेत्र का 0.75% भू भाग आता है। विकासखंड स्तर पर सबसे अधिक वर्तमान परती भूमि का प्रतिशत धौरहरा विकासखंड में 4.09% तथा सबसे कम लखीमपुर विकासखंड के अंतर्गत 0.30% है।

अन्य परती-

अन्य परती क्षेत्र के अंतर्गत जनपद का सबसे कम भू क्षेत्र, मात्र 88 हेक्टेयर ही पाया जाता है, जो जनपद के कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल का मात्र 0.01% ही है। विकासखंड स्तर पर सबसे अधिक अन्य परती क्षेत्र, ईसानगर विकासखंड में 0.05% तथा सबसे कम बेहजम, फूलबेहड़, नकहा, पसगवां, मोहम्मदी, लखीमपुर, धौरहरा, व बाकेगंज में 0.00% ही है।

ऊसर एवं कृषि हेतु अयोग्य भूमि-

ऊसर भूमि उस भूमि को कहा जाता है जो बंजर, अनुपजाऊ और खेती के लिए अनुपयुक्त होती है। इन भूमि क्षेत्रों में लवणता और क्षारीयता की अधिकता पाई जाती है। अध्ययन क्षेत्र में ऊसर एवं कृषि हेतु अयोग्य भूमि कुल प्रतिवेदित क्षेत्र के 0.62% भू-भाग पर विस्तृत है। विकास खण्ड स्तर पर सबसे अधिक ऊसर एवं कृषि हेतु अयोग्य भूमि का प्रतिशत बेहजम विकासखण्ड में 2.35% है। जबकि जबसे कम प्रतिशत क्षेत्र 0.45% बिजुआ विकासखण्ड में है।

कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि-

जनपद में कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि कुल प्रतिवेदित क्षेत्र के 11.61% भू-भाग पर पायी जाती है। विकासखंड स्तर पर सबसे अधिक कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि धौरहरा विकासखण्ड में, विकासखंड के कुल प्रविवेदित क्षेत्रफल का 46.95% है। जबकि सबसे कम बाकेगंज विकासखण्ड में 9.46% है।

चरागाह-

चारागाह एक ऐसे क्षेत्र को कहा जाता है जहां पशुओं को चराने के लिए घास, चारा और अन्य वनस्पतियां उगाई जाती हैं। यह एक प्रकार का खुला क्षेत्र होता है जहां पशुओं को खुलकर चरने के लिए जगह मिलती है। जनपद में चरागाह के अंतर्गत जनपद के कुल प्रतिवेदित क्षेत्र का 0.13% भाग आता है। जिसमें सबसे अधिक 0.64%

भाग मितौली विकासखण्ड के अन्तर्गत, जबकि जबसे कम भाग 0.01% पलिया विकासखण्ड के अन्तर्गत आता है।

उद्यानों, वृक्षों, एवं झाड़ियों का क्षेत्रफल-

अध्ययन क्षेत्र में उद्यानों, वृक्षों, एवं झाड़ियों के अन्तर्गत जनपद के कुल प्रतिवेदित क्षेत्र का 0.77% हिस्सा आता है। विकासखण्ड स्तर पर इसके अन्तर्गत सबसे अधिक क्षेत्र 2.26% धौरहरा विकासखंड के अन्तर्गत आता है, जबकि जबसे कम प्रतिशत क्षेत्र 0.28% लखीमपुर विकासखण्ड के अंतर्गत आता है।

शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल-

इसके अंतर्गत मुख्य रूप से कृषि क्षेत्र को सम्मिलित किया जाता है। कृषि वह प्रक्रिया है जिसमें भूमि की जुताई, फसलों की बुवाई, सिंचाई, उर्वरकों का प्रयोग और कटाई जैसे कार्य किए जाते हैं। अध्ययन क्षेत्र उपजाऊ मृदा प्रधान क्षेत्र होने के कारण जनपद के कुल प्रतिवेदित क्षेत्र का सबसे अधिक भू-भाग शुद्ध बोए गए क्षेत्र के अंतर्गत ही आता है। यह जनपद के कुल प्रतिवेदित क्षेत्र का 60.06% है। विकासखण्ड स्तर पर इसके अंतर्गत सबसे अधिक अधिक प्रतिशत भू-भाग लखीमपुर विकासखंड में 87.90% है, जबकि सबसे कम प्रतिशत भू भाग धौरहरा विकासखंड के अंतर्गत 37.29% है।

निष्कर्ष-

अध्ययन क्षेत्र जनपद लखीमपुर-खीरी में भूमि उपयोग प्रतिरूप के गहन अध्ययन से पता चलता है यहाँ पर शुद्ध बोये गये क्षेत्र का भू-भाग सर्वाधिक है, जो जनपद के कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल का 60.06% है। यह प्रतिशत राष्ट्रीय औसत से 46.48% से अधिक तथा उत्तर प्रदेश के प्रादेशिक औसत 68.93% से कुछ कम है। इसी प्रकार जनपद में सबसे कम क्षेत्रफल अन्य परती भूमि का है जो लगभग न के बराबर है। यह जनपद के कुल प्रतिवेदित क्षेत्र का मात्र 0.01% ही है। इसी प्रकार अन्य अनुपयोगी भूमि जैसे- कृष्य बेकार भूमि 0.81%, वर्तमान परती भूमि 0.75% तथा ऊसर एवं कृषि हेतु अयोग्य भूमि 0.62% है। इस अनुपयोगी भूमि में वैज्ञानिक तरीकों से सुधार कर उसे उपयोगी भूमि के रूप में परिवर्तित किया जा सकता है। जिससे जनपद के अन्य उपयोगी क्षेत्र में वृद्धि होगी तथा उत्पादन बढ़ेगा। जनपद के लखीमपुर, मितौली, पसगवां, तथा बेहजम विकासखंडों में वन क्षेत्र वृद्धि पर ध्यान देने की आवश्यकता है क्योंकि यहाँ यह क्षेत्र 2.0% से भी कम है। अतः नदियों, नहरों, रास्तों व अनुपयोगी भूमि पर वृक्षारोपण कर इसके क्षेत्र में वृद्धि की जा सकती है। जनपद के उपयोगी क्षेत्रों तथा उत्पादकता में वृद्धि कर जनपद के आर्थिक विकास को और अधिक तीव्र किया जा सकता है। अतः इस विषय पर ध्यान देने की महती आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1. जिला सांख्यिकी पत्रिका, जनपद लखीमपुर खीरी, वर्ष- 2023
2. डॉ० मौर्य एस०डी० (2014) : मानव एवं आर्थिक भूगोल।
3. गौतम, अलका एवं रस्तोगी, सोनल (2017) : संसाधन भूगोल- दोहन, संरक्षण एवं प्रबंधन, शारदा पुस्तक भवन, प्रयागराज।
4. यादव, सत्य प्रकाश, शोध पत्र : आजमगढ़ जनपद में भूमि उपयोग एवं शस्य गहनता का एक भौगोलिक अध्ययन।
5. दैनिक जागरण, लखीमपुर-खीरी।
6. योजना, नई दिल्ली।
7. गजेटियर, लखीमपुर-खीरी।
8. Husain Majid, Agriculture geography, new delhi.
9. htpp://Lakhimpur.nic.in
10. htpp://updes.up.nic.in